Date: / /

आनुवांशिक गुणों का निर्धारण →

गर्भाधान की प्रक्रिया के दौरान जब शुक्राणु अण्डाणु से मिलता है। तो कोशिका विभाजन से पूर्व माता-पिता के 23-23 क्रोमासोम्स निकल नये 23 जोड़े क्रोमोसोम्स बनाते हैं। क्रोमोसोम्स में माता-पिता के जीन्स पाये जाते हैं। जो माता-पिता तथा अन्य पूर्वजों के विभिन्न आनुवांशिक गुणों का निर्धारण करते हैं।

लिंग का निर्धारण → गर्भाधान जो कि वंशानुक्रम का आधार है। वही बालक के लिंग का भी निर्धारण करता है। कोई भी चिकित्सक गर्भधारण के पश्चात् निर्धारित लिंग को परिवर्तित नहीं कर सकता है। शिशु के लिंग निर्धारण में क्रोमोसोम्स महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह पूर्व में ही वर्णन किया जा चुका है। कि स्त्री और पुरुष के उत्पादक कोषों में 23 जोड़े क्रोमोसोम्स पाये जाते हैं। स्त्रियों में सभी क्रोमोसोम्स X प्रकार के होते हैं जबकि पुरुषों में 'X' और 'Y' मिलने से लड़की का जन्म होता है किन्तु जब Y क्रोमोसोम गर्भित करता है तो X और Y मिलने से बालक का जन्म होता है।

Date: / /

बच्चों की संख्या का निर्धारण → सामान्यतय: एक गर्भ से एक ही शिशु जन्म लेता है। किन्तु कभी-2 यह देखा गया है। कि एक से अधिक बच्चों का जन्म होता है इसका कारण भी गर्भाधान प्रक्रिया ही है। सामान्यतय प्रत्येक 28 दिनों में केवल एक ही अण्डाणु परिपक्व होकर फैलोपियन ट्यूब में आता है। किन्तु कभी-कभी प्राकृतिक प्रक्रिया के विरुद्ध जब किसी कारणवश दो अण्डाणु परिपक्व होकर फोलोपियन ट्यूब में आ जाते है और दो अलग-अलग शुक्राणुओं द्वारा गर्भित होते है।

1- बुद्धि व मानसिक क्षमता पर प्रभाव →

(i) गाल्टन का अध्ययन → गाल्टन ने अपने अध्ययन द्वारा प्रतिपादित किया कि बुद्धि व मानसिक योग्यता वंशानुक्रम द्वारा निर्धारित होती है।

(ii) गोडार्ड का अध्ययन → गोडार्ड का मानना है कि मंद बुद्धि माता-पिता का संतान मंद बुद्धि और तीव्र बुद्धि माता-पिता का संतान तीव्र बुद्धि वाली होती है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान

Date: / /

2- सामाजिक स्थिति का निर्धारण →

(i) विशिप का अध्ययन → "विशिप के मतानुसार वंशपरम्परा व्यक्ति की सामाजिक स्थिति को निर्धारित करती है। प्रतिष्ठित माता-पिता की संताने प्रतिष्ठा प्राप्त करती है विशिप ने रिचर्ड एडवर्ड के परिवार का अध्ययन किया,

3- चरित्र व आचरणों का प्रभाव →

i डग्डेल का अध्ययन → "डग्डेल का मत था कि व्यक्ति के चरित्र व आचरण पर वंशानुक्रम का प्रभाव पड़ता है। तथा चरित्रहीन माता-पिता की संताने चरित्रहीन ही होते हैं, डग्डेल ने ज्यूक्स नामक एक मछली के शिकारी का परिवार का अध्ययन किया ज्यूक्स दुराचारी व पथभ्रष्ट था उसके विवाह भी अपने समान पथभ्रष्ट महिला से किया इन दोनों से जो एक हजार वंशज हुये उनमे 300 बचपन मे ही मर गये 310 भिक्षुक

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Date: / /

240 आजीवन रोगी 130 उपराधी न हत्यारे निकले केवल 20 ही सामान्य कोटी के थे। अतः निष्कर्ष निकला कि व्यक्ति के आचरणों पर वंशानुक्रम का प्रभाव पड़ता है।

4- प्रजाति की श्रेष्ठता पर प्रभाव →

Klineberg के अनुसार, बुद्धि की श्रेष्ठता प्रजाति के कारण होती है। इसी कारण अमेरिका की श्वेत प्रजाति नीग्रो प्रजाति से श्रेष्ठ है।

5→ शारीरिक लक्षणों पर प्रभाव →

शारीरिक लक्षणों के निर्धारण में वंशानुक्रम का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखायी देती है। माता-पिता के जीन्स शारीरिक लक्षणों को निर्धारित करते हैं। लम्बाई, भार, त्वचा का रंग आँखों का रंग आदि सभी गुण वंशानुक्रम द्वारा ही प्राप्त होते हैं।

जन्मजात असामान्यतायें

गर्भस्थ शिशु के विकास क्रम में प्रथम दो महीने बड़े नाजुक होते हैं। क्योंकि यह वह समय अगर कोई भाग न बने तो वह अपूर्ण रह जाता है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Date: / /

वंशानुक्रम और वातावरण का सापेक्षिक महत्व →

यद्यपि वंशानुक्रम और वातावरण के सम्बन्ध में वैज्ञानिकों ने अपने - अपने अध्ययन द्वारा यह प्रमाणित करने का प्रयास किया है कि बालक के विकास पर वंशानुक्रम का या वातावरण का ही प्रभाव पड़ता है। किन्तु उपर्युक्त दोनों प्रकार के मतों से यह स्पष्ट है कि बालक के विकास में वातावरण और वंशानुक्रम दोनों का ही महत्वपूर्ण योगदान होता है।

मानव विकास क्रम में वंशानुक्रम और वातावरण की उतनी ही आवश्यकता होती है जितनी कि एक पौधे के विकास के लिए बीज तथा भूमि, जल, वायु तथा खाद की जिस प्रकार आनुवंशिकता के बिना जीव की उत्पत्ति की कल्पना नहीं की जा सकती है।

मैकाइवर एवं पेज ने वंशानुक्रम तथा वातावरण के महत्व को स्पष्ट करते हुये कहा है आवश्यक जितना कि दूसरा न तो कोई कभी हटाई जा सकता

मीरा मैमोरियल महाविद्यालय
शिक्षक एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, छाता, बलिया

Date: / /

न ही कभी अलग ही की जा सकती है। बुडवर्थ ने वंशानुक्रम और वातावरण के महत्व को एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। गोभी और टमाटर के बीज पास-पास बोकर समान वातावरण देने पर भी गोभी में गोभी और टमाटर से टमाटर का पौधा ही उत्पन्न होगी उनकी कितनी भी देखभाल क्यों न की जाय। फिर भी एक जाति का पौधा दुसरी जाति में परिवर्तित नहीं किया जा सकता है।

विकास की विभिन्न अवस्थायें तथा विकासात्मक कार्य →

प्राणी के विकास क्रम में यह देखा गया है। कि शून्य से प्रारम्भ होने वाला जीव धीरे-धीरे विकास क्रम की विभिन्न अवस्थाओं का पार करता हुआ अन्त में प्रौढ़ावस्था और वृद्धावस्था को प्राप्त करता है। जो कि प्राणी के जीवन की अन्तिम अवस्था होती है।

हैविंगहर्स्ट के अनुसार → "विकासात्मक कार्य वे कार्य हैं। जो किसी प्राणी के जीवन की निश्चित आयु पर ही

प्राचार्य
मेमोरियल महाविद्यालय
एवं प्रशिक्षण संस्थान
ताखा, बलिया

Date: / /

प्रकट होते हैं। इन क्रियाओं को सफलतापूर्वक प्राप्ति से प्रसन्नता होती है। तथा विकास की अगली अवस्था के कार्यों को सीखने में सफलता मिलती है।

विकासात्मक कार्यों की उत्पत्ति ->

(i) शारीरिक परिपक्वता -> विकासात्मक कार्यों की उत्पत्ति प्रमुख रूप से शारीरिक परिपक्वता के कारण ही होती है। जैसे-2 प्राणी अपने विकास क्रम में शारीरिक परिपक्वता प्राप्त करता जाता है। वैसे-2 उसकी विभिन्न विकासावस्थाओं में अलग-अलग प्रकार के व्यवहारों तथा क्रियाओं की उत्पत्ति होती है। जैसे - बैठना खड़ा होना, चलना, दौड़ना भागना आदि ये सभी क्रियाये एक ही क्रिया के विभिन्न परिष्कृत रूप हैं। ~~जो~~

(ii) प्राणी की आवश्यकतायें -> कुछ विकास कार्य व्यक्ति की विभिन्न आवश्यकताओं के फल स्वरूप उत्पन्न होती है जैसे -> नवजात शिशु भूख लगने पर रोता है। यह उसकी जैविकीय आवश्यकता है। इसी प्रकार पढ़ने

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Date: / /

नवजात शिशु भूख लगने पर रोता है। यह उसकी जैविकीय आवश्यकता है। इस प्रकार पढ़ना लिखना, सीखना अच्छी आदतों का विकास करना आदि सामाजिक आवश्यकतायें हैं।

विकासात्मक क्रियाओं का महत्व →

प्रत्येक प्राणी के जीवन में विकासात्मक क्रियाओं का बड़ा महत्व है। क्योंकि वर्तमान अवस्था के विकासात्मक कार्य ही आगामी अवस्था में सम्पन्न होने वाली क्रियाओं का आधार होते हैं। यदि कोई प्राणी अपने विकास क्रम में निर्धारित क्रियाओं को सम्पन्न नहीं करता है।

1- विकास के अध्ययन में सहायक →

किसी भी अवस्था के विकासात्मक कार्य दूसरी अवस्था के विकासात्मक कार्यों में सहायक होते हैं। यदि वर्तमान अवस्था के विकासात्मक कार्य आयु के अनुसार नहीं होते हैं तो आगामी अवस्था के विकासात्मक कार्यों को नहीं करता है।

2→ आगामी विकास में सहायक →

एक अवस्था के विकासात्मक कार्य दूसरी अवस्था के विकासात्मक कार्यों में सहायक होते हैं।

Date: / /

यदि वर्तमान अवस्था के विकासात्मक कार्य आयु के अनुसार नहीं होते हैं, तो आगामी अवस्था के विकासात्मक कार्य आयु के अनुसार नहीं होते है तो आगामी अवस्था के विकास में सूचक होते हैं।

3-7 माता-पिता के निर्देशन में सहायक →

प्रत्येक अवस्था के विकासात्मक कार्यों के द्वारा माता-पिता यह जान सकते है कि किस आयु विशेष में बालक कौन-सी क्रियायें करेगा और उन क्रियाओं की सफलता के लिए क्या आवश्यक है।

विभिन्न अवस्थाओं में विकासात्मक कार्य →

सभी अवस्थाओं के विकासात्मक कार्य समान नहीं होते है इनमें थोड़ी-2 भिन्नता अवश्य रहती है किन्तु धीरे-2 आगे बढ़ते हुये ये विकासात्मक कार्य विकास के स्वरूप को स्पष्ट कर देते हैं।

जैसे डेढ़ से दो वर्ष की आयु में बालक अस्पष्ट उच्चारण करता है। फिर 3-4 वर्ष में उपष्ट उच्चारण करने लगता है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Date: / /

प्रत्येक सामान्य प्राणी का विकास क्रम से कई अवस्थाओं में होता है। इन अवस्थाओं को विकास की अवस्थायें कहा जाता है।

1	शैशवावस्था	जन्म से पन्द्रह दिन तक
2-	बचपनावस्था	दूसरे सप्ताह से 2 वर्ष तक
3-	पूर्व बाल्यावस्था	2 से 6 वर्ष तक
4-	उत्तर बाल्यावस्था	6 से 12 वर्ष तक
5-	किशोरावस्था	13 से 21 वर्ष तक
6-	प्रौढ़ावस्था	21 से 40 वर्ष तक
7-	मध्यावस्था	41 से 60 वर्ष तक
8-	वृद्धावस्था	60 के बाद

मातृकला एवं शिशु पालन का अर्थ एवं महत्त्व →

जीवित प्राणी अपने जीवन प्रसार में कभी स्थिर और कभी गतिहीन नहीं पाया गया है। गर्भकालीन अवस्था से लेकर जीवनपर्यन्त तक यह निरन्तर नये-2 गुणों तथा अवस्थाओं की प्राप्ति करता रहता है, जिससे वह धीरे-2 प्रत्येक आगे-आने वाली अवस्था में और अधिक विकसित व परिपक्व दिखायी देता है। विकास की इस प्रक्रिया में पहले गर्भावस्था शैशवावस्था तथा फिर बाल्यावस्था आती है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Date: / /

मातृकला एवं शिशु पालन का महत्व →

आज की बालिका ही भावी माँ होती है। यदि उसे माँ बनने मे तथा शिशु के पालन - पोषण में सहायता मिलती है।

1→ **स्वस्थ मातृत्व प्राप्त करने में सहायता**

मातृकला के अध्ययन से एक स्त्री को यह जानकारी प्राप्त होती है कि सफल मातृत्व के लिए कौन - कौन सी योग्यताएं आवश्यक हैं। बगैर जीव स्त्री माँ नहीं बन पाती हैं।

2→ **सुरक्षित प्रसव तथा स्वस्थ शिशु के विकास में सहायता →**

मातृकला एवं शिशु पालन के ज्ञान से यौन शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलता है। कि सम्पूर्ण गर्भकालीन अवस्था में वह किस प्रकार भोजन ले किस प्रकार के वस्त्र पहने किस प्रकार व्यायाम करे कैसा साहित्य पढ़े आदि जिससे स्वस्थ शिशु का विकास हो तथा प्रसव के समय किसी प्रकार की कठिनाई है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Date: / /

3- यौन शिक्षा प्रदान करने में सहायता → मातृकला के अध्ययनों से बालिकाओं को अप्रत्यक्ष रूप से यौन शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलता है। क्यों कि इसके द्वारा स्त्री-पुरुष के प्रजनन अंग की रचना तथा बालक-बालिकाओं में होने वाले शारिरिक परिवर्तनों के बारे में बताया जाता है।

4- पूर्व प्रसव, प्रसवकालीन तथा प्रसवोपरान्त देखभाल में सहायता → मातृकला एवं शिशु पालन के अध्ययन से यह जानकारी प्राप्त होती है। कि सुरक्षित प्रसव के लिये प्रसव से पूर्व किन-किन सावधानियों की आवश्यकता होती है। प्रसव के समय किस-किस सामान की आवश्यकता होती है।

मातृकला एवं शिशु पालन का विषय क्षेत्र →

मातृकला एवं शिशु पालन का विषय क्षेत्र बहुत ही व्यापक है इसमें गर्भाधान की प्रक्रिया से लेकर शिशु के सर्वांगीन विकास से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया जाता है।

1- मातृत्व के लिये आवश्यक उपयुक्तताओं का अध्ययन → मातृकला एवं शिशु पालन के अन्तर्गत

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Date: / /

करने से पूर्व आवश्यक उपयुक्तताओं का अध्ययन किया जाता है। जिससे सन्तान के पालन-पोषण में सहायता मिलती है।

2- मानव प्रजनन तंत्र का अध्ययन→ मातृकला एवं शिशु पालन के अन्तर्गत स्त्री और पुरुष के प्रजनन तन्त्र की रचना तथा कार्यों का अध्ययन किया जाता है।

3→ शिशु के गर्भकालीन विकास का अध्ययन→ मातृकला एवं शिशु पालन के अन्तर्गत स्त्री और पुरुष के प्रजनन शारीरिक सम्बन्धों से सम्बन्ध होने वाली 'गर्भाधान प्रक्रिया' तथा शिशु के 'गर्भकालीन विकास' की सम्पूर्ण प्रक्रिया का अध्ययन किया जाता है।

4→ प्रसव पूर्व तैयारी का अध्ययन→ मातृकला एवं शिशु पालन के अन्तर्गत प्रसव पूर्व तैयारी जैसे - प्रसव के लिये आवश्यक आवश्यक समान, उचित डॉ० का चुनाव प्रसव के लिए स्थान का चुनाव गर्भवती स्त्री तथा नवजात के लिए वस्त्रों का चुनाव आदि बातें ध्यान में रखना चाहिए।

प्राचार्य महाविद्यालय ... शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान पाण्डेयपुर, ... बलिया

Date: / /

5- प्रसव प्रक्रिया तथा नवजात शिशु एवं प्रसूता की देखभाल का अध्ययन ⇒ मातृकला एवं शिशु पालन के अन्तर्गत प्रसव प्रक्रिया, प्रसव पूर्व लक्षण तथा शिशु जन्म के बाद नवजात शिशु एवं प्रसूता की देखभाल के बारे में अध्ययन किया जाता है।

6- बाल पोषण विधियों का अध्ययन ⇒ मातृकला एवं शिशु पालन के अन्तर्गत बाल पोषण की विभिन्न विधियों: जैसे- भोजन ग्रहण करना वस्त्र मल-मूत्र नियन्त्रण स्वच्छता अच्छी आदतों का विकास आदि का अध्ययन किया जाता है। जिससे बाल पोषण में सहायता मिलती है।

7 बाल विकास की असामान्यताओं का अध्ययन ⇒ मातृकला के अन्तर्गत बाल विकास के विभिन्न क्षेत्रों में होने वाले शारीरिक व मानसिक दोषों, अस्वस्थ आदतों व्यवहारात्मक समस्याओं बाल अपराध तथा उनके कारण व निराकरण का अध्ययन किया जाता है। जिससे माता-पिता को असामान्य बालकों के पालन-पोषण में सहायता मिलती है।

8- परिवार नियोजन तथा परिवार कल्याण कार्यक्रम का अध्ययन ⇒ मातृकला तथा शिशु पालन के अन्तर्गत परिवार कल्याण की दृष्टि से परिवार नियोजन की उपयोगिता परिवार को नियोजित करने के तरीके तथा परिवार कल्याण कार्यक्रम

Date: / /

में संलग्न विभिन्न संस्थाओं तथा उनके कार्यों का अध्ययन किया जाता है।

प्रसव पूर्व गर्भवती की देखभाल के उद्देश्य →

1- भावी माता के स्वास्थ्य की देखभाल करना तथा स्वास्थ्य स्तर की ऊँची उठाना।
2- गर्भावस्था के दौरान उत्पन्न असामान्य स्थितियों का शीघ्र निदान व उपचार करना।
3→ भावी माता को प्रसूति के लिए शारीरिक व मानसिक रूप से तैयार करना।
4- गर्भवती की समुचित देखभाल द्वारा मातृ एवं शिशु मृत्यु दर कम करना
5- गर्भस्थ शिशु का स्वरूप विकास करना।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

गर्भवती महिला की देखभाल के लिए आवश्यक बातें →

गर्भवती महिला की समुचित देखभाल के अन्तर्गत निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है।

1- डॉक्टरी 2- आहार 3- वस्त्र
4- व्यायाम 5- व्यक्तिगत स्वच्छता
6- यौन सम्बन्ध 7- मानसिक स्वास्थ्य
8- परिश्रम विश्राम व निद्रा 9- सूर्य का प्रकाश व स्वच्छ वायु 10- स्वास्थ्य सुरक्षा।

Date: / /

गर्भावस्था में आहार के मुख्य पौष्टिक तत्व →

गर्भवती माँ के आहार में निम्नलिखित पौष्टिक तत्वों का समावेश करना चाहिए।

1- प्रोटीन → प्रोटीन शरीर निर्माणक और वृद्धिवर्धक तत्व है। अतः गर्भकालीन अवस्था में गर्भस्थ शिशु की वृद्धि तथा विकास के लिये अतिरिक्त प्रोटीन की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त माँ के शरीर के आन्तरिक अंगों की क्रियाशीलता बढ़ जाने के कारण माँ के शरीर में शरीर में कोशिकाओं की टूट फूट बढ़ जाती है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया